अरेबियन नाइट्स

सोने का जग

वैल बिरो

एक बार बगदाद में एक व्यापारी था जिसका नाम खालिद था. कई सालों से वह मक्का की तीर्थयात्रा करना चाहता था, और अब आखिरकार उसका समय आ गया था. यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसके पास अपनी वापसी में कुछ पैसे सुरक्षित हों, उसने एक जग में एक हज़ार सोने के सिक्के डाले और ढक्कन बंद करने से पहले उसने उन्हें जैतून के फलों से ढक दिया.

उस जग को वो अपने दोस्त महमूद के पास ले गया, जो उसका एक साथी व्यापारी था. उसने कहा, "कृपया मेरे कुछ महीनों बाद लौटने तक मेरे इस जैतून के जग को सुरक्षित रखना." महमूद उसके लिए सहर्ष राज़ी हो गया, और उसने उस जग को अपने स्टोररूम में ताला लगाकर रख दिया.

अपनी तीर्थयात्रा पूरी करने के बाद, खालिद मक्का में अपने दोस्तों के साथ ऊँटों के कारवां पर सवार होकर मिस्र और अन्य आस-पास के देशों के प्रसिद्ध स्थलों की यात्रा करने चला गया. उन देशों के बारे में उसने कई शानदार कहानियाँ सुनी थीं.
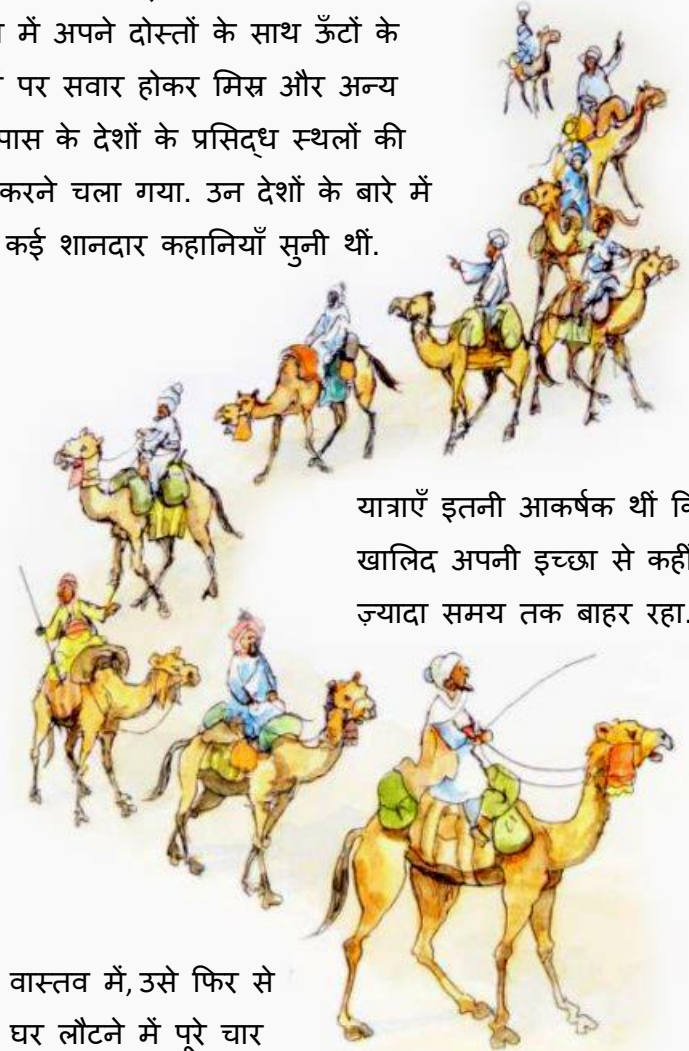
यात्राएँ इतनी आकर्षक थीं कि खालिद अपनी इच्छा से कहीं ज़्यादा समय तक बाहर रहा.

वास्तव में, उसे फिर से घर लौटने में पूरे चार साल लग गए.

इस बीच, महमूद को आश्चर्य हुआ कि क्या खालिद कभी जैतून का अपना जग लेने के लिए वापस आएगा. इतने लंबे अर्से के बाद, उसने मान लिया कि खालिद किसी दूर देश में मर गया होगा.

"मुझे बेचारे खालिद पर तरस आता है," उसने एक शाम सोचा, "लेकिन निश्चित रूप से उसके जैतून बर्बाद नहीं होने चाहिए." इसलिए उसने जग को उल्टा किया, केवल यह देखने के लिए कि कुछ झुर्रीदार पुराने जैतूनों के नीचे वो जग, सोने के सिक्कों से भरा हुआ था!

महमूद हैरान रह गया! अपनी आँखों पर यकीन न करते हुए, उसने सोने को बाहर निकाला और उसे छिपा दिया. फिर उसने बर्तन को ताज़े जैतूनों से भर दिया और उसे वहीं वापस वहीं रख दिया जहाँ उसने उसे पहले रखा था.

आप कल्पना कर सकते हैं कि महमूद को कितना आश्चर्य हुआ होगा जब खालिद दो हफ़्ते बाद, ज़िंदा और स्वस्थ वापिस आया और उसने अपना जग वापिस मांगा. जब खालिद सुरक्षित घर पहुँचा, तो उसने जग में सोने के सिक्के टटोलने के लिए अंदर हाथ डाला. लेकिन उसे उसमें केवल जैतून ही मिले. सोने के सभी सिक्के गायब थे.

इसलिए खालिद अपने दोस्त के पास वापस गया और उससे विनम्रतापूर्वक कहा कि अगर उसने किसी ज़रूरी काम के लिए उसका सोना उधार लिया हो, तो वह उसे अपनी सहूलियत के अनुसार वापिस कर दे. लेकिन महमूद ने ज़ोरदार तरीके से इस बात से इनकार किया कि उसने सोना लिया था. एक लंबी बहस हुई, जिससे उनके पड़ोसी काफ़ी उत्सुक हुए.

अंत में, खालिद को लगा कि उस मामले में कोई और रास्ता नहीं बचा था, सिवाय इसके कि क़ाज़ी या मजिस्ट्रेट ही उसका फैसला करे.

सुनवाई के दिन, विवाद सुनने के लिए कचेहरी में भीड़ जमा हो गई. यहाँ तक कि पड़ोस के कुछ बच्चे भी सुनने आए.

लेकिन महमूद इतना अच्छा दोस्त नहीं था. उसने कसम खाई कि बर्तन में एक भी सोने का सिक्का नहीं था. और उसे इस बात पर भी संदेह था कि उसमें कभी सोने के सिक्के थे भी, क्योंकि खालिद ने केवल जैतूनों का ही ज़िक्र किया था.
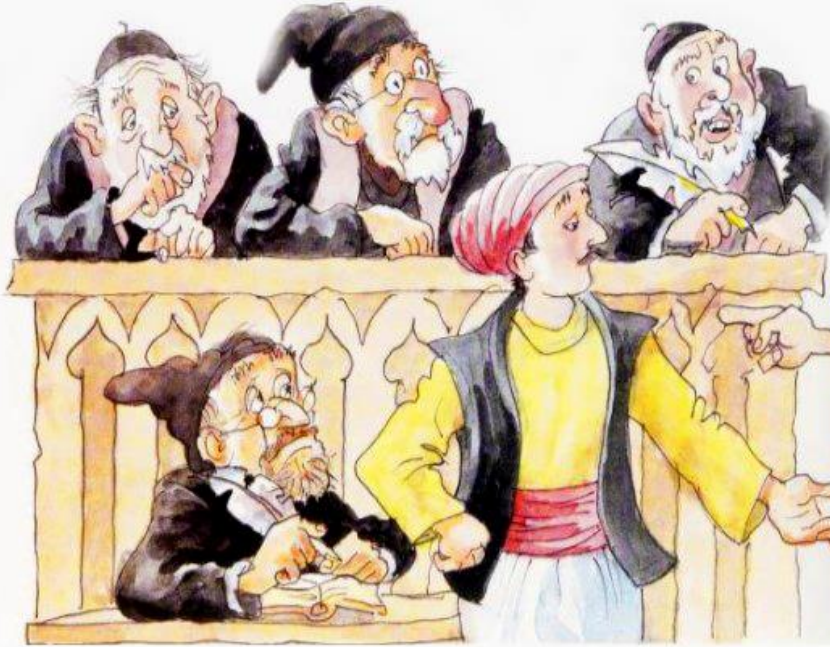
खालिद ने जोर देकर कहा कि उसने जग में जैतून के कुछ फलों के नीचे सोने के एक हजार सिक्के छिपाए थे, और उसने महमूद पर भरोसा किया था कि वह उन्हें सुरक्षित रखेगा, क्योंकि वह उसका दोस्त था.
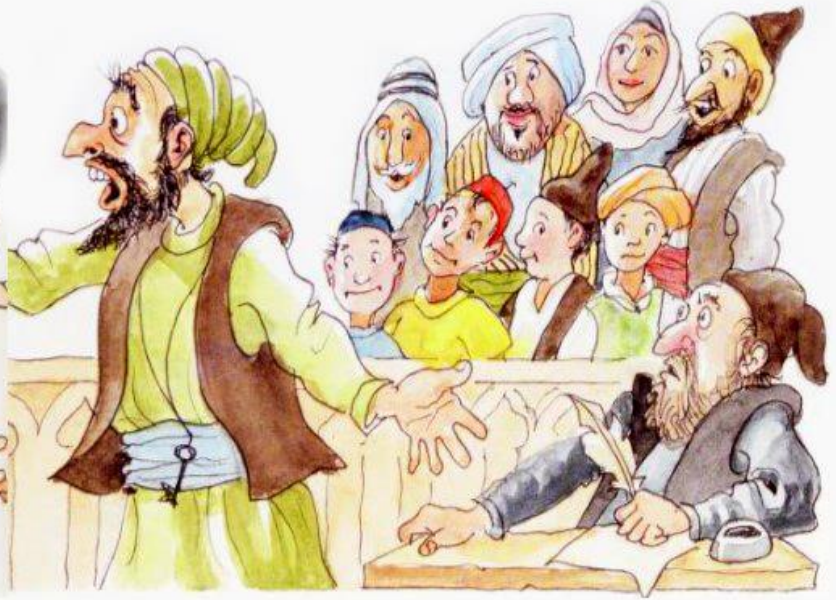
चूँकि दोनों पक्षों के लिए कोई गवाह नहीं था, इसलिए क़ाज़ी ने मामले को खारिज कर दिया. "तो ठीक है," खालिद ने विद्रोही स्वर में कहा, "मैं खुद खलीफा से अपील करूँगा. वह मुझे सच्चा न्याय देगा!"

ऐसा हुआ कि खलीफा हारून अलराशिद ने खालिद के मामले की सुनवाई से एक दिन पहले शहर में अपना पारंपरिक दौरा करने का फैसला किया.
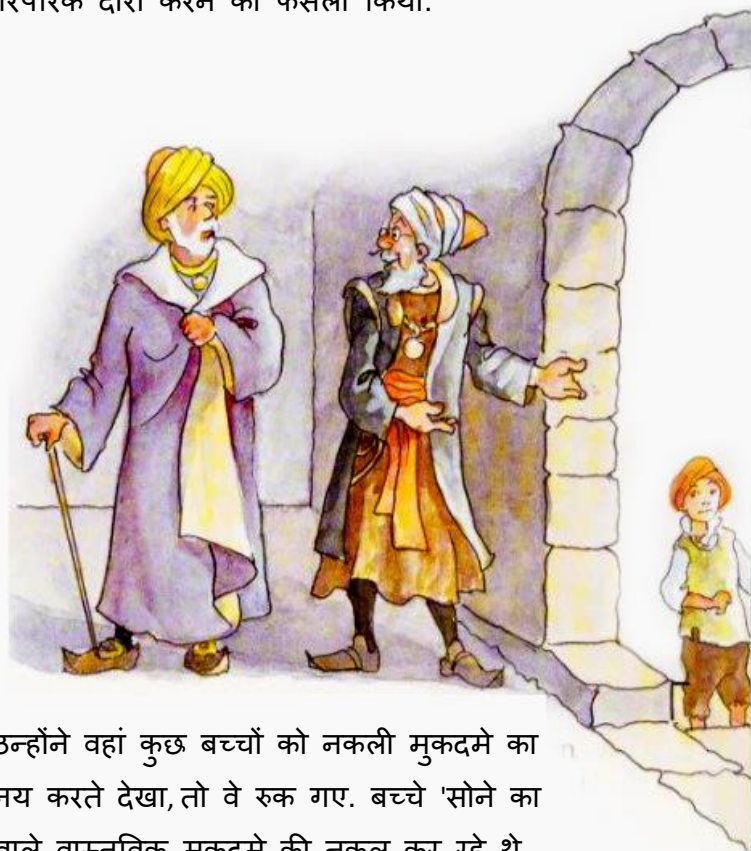
जब उन्होंने वहां कुछ बच्चों को नकली मुकदमे का अभिनय करते देखा, तो वे रुक गए. बच्चे 'सोने का जग' वाले वास्तविक मुकदमे की नकल कर रहे थे. लेकिन जैसे-जैसे मुकदमा आगे बढ़ा, अली नामक एक लड़के द्वारा निभाए गए क़ाज़ी ने जैतून के जग की जांच करने की आज्ञा दी.

जैतून के व्यापारी होने का नाटक करने वाले दो लड़के एक जग लेकर आए, फिर उसमें उन्होंने जैतून के फलों का स्वाद चखने की कोशिश की, और कहा कि वे जैतून एकदम ताजे और रसीले थे. "लेकिन अगर महमूद का दावा सच होता," नकली क़ाज़ी अली ने कहा, "क्योंकि उन्हें चार साल पहले बर्तन में डाला गया था, तो जैतून अब तक कब के खराब हो गए होते और उनमें फफूंद लग गई होती. मैं घोषणा करता हूं कि महमूद ने हाल ही में बर्तन में ताज़े जैतून डाले होंगे, और इसलिए उसी ने सोने के सिक्के भी लिए होंगे."
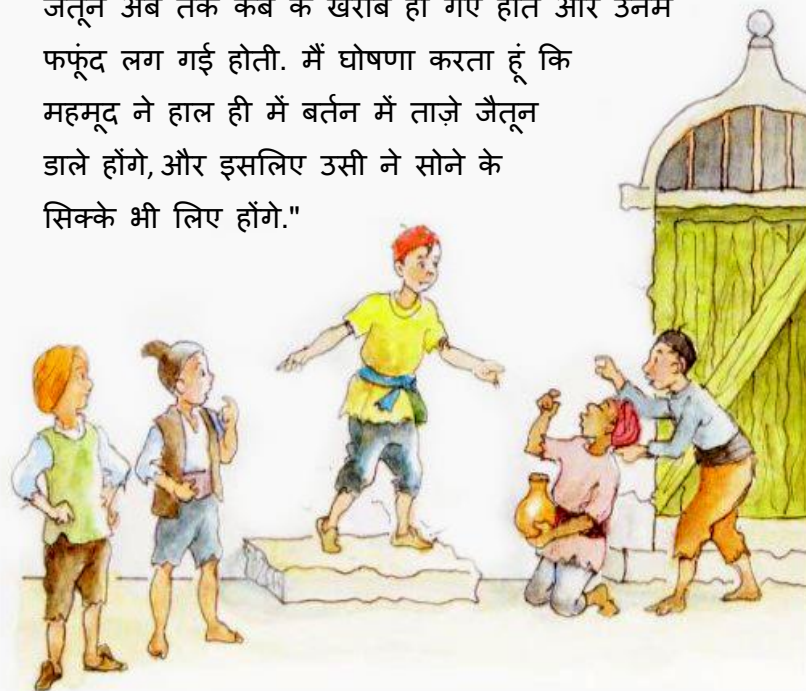
खलीफा, अली की बुद्धिमत्ता से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अगले दिन खालिद का मामला सुनने के लिए लड़के को महल में आने के लिए आमंत्रित किया.

"निःसंदेह," उन्होंने कहा, "ये जैतून तो एकदम ताजे हैं और इस साल की फसल के हैं. वे बिल्कुल भी चार साल पुराने नहीं हैं."

अगले दिन मुकदमे में, खलीफा ने अली को खुद न्यायाधीश बनने के लिए अपने सामने खड़ा किया.

मुकदमा ठीक वैसे ही आगे बढ़ा जैसे कि बच्चों के खेल के दौरान हुआ था, और अली ने जैतून के जग का मुआयना करने का आदेश दिया. लेकिन अब खालिद का असली जग लाया गया तो उसमें मौजूद जैतूनों को असली जैतून के व्यापारियों ने चखा.
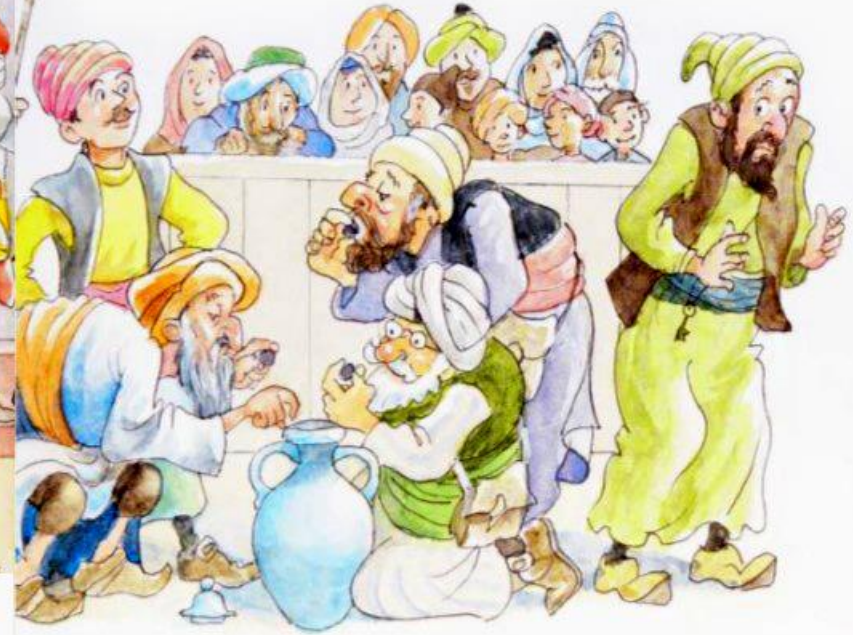
खलीफा ने अपना निर्णय सुनाया कि महमूद चोरी का दोषी था. उन्होंने महमूद को, खालिद को सोना वापस करने का आदेश दिया. और उसे अपने गलती का पश्चाताप करने के लिए छह महीने के लिए जेल भेजा.

अंत में न्याय हुआ. खालिद का सोना लौटा दिया गया और महमूद को उचित सजा दी गई. और अली को खलीफा ने बतौर इनाम एक पर्स दिया जिसमें सौ सोने के सिक्के थे - इतनी कम उम्र में महान बुद्धिमत्ता दिखाने के लिए वो वाकई एक अच्छा इनाम था.